शिव जी और उनकी दोनों पत्नियाँ

शिव का अर्थ है आनन्दमय।

शिव सदा प्रसन्न रहते हैं। दोनों पत्नियाँ रहने से ही खुशी मिलती है। एक भौतिक और दूसरी आध्यात्मिक है–पार्वती और आकाशगंगा।

आकाशगंगा का मतलब है ब्रह्माण्डीय ऊर्जा। इन दोनों का उपयोग करने से ही हमेशा खुशी मिलती है। शिवजी ऐसा ही करते हैं।

भौतिकता या आध्यात्मिकता–किसी एक पर आधारित रहने वाले को पचास प्रतिशत प्रसन्नता ही मिलती है। परंतु मनुष्य को शत प्रतिशत जीना है इसलिए दिन भर भौतिक और रात में आध्यात्मिक होना है। दिन में भौतिक शरीर और रात में सूक्ष्म शरीर का उपयोग करना है।

महान मेघावी नागार्जुन ने कहा है कि संसार ही निर्वाण है। संसार अर्थात भौतिकता ही नहीं, आध्यात्मिकता भी है। संसार ही निर्वाह है, संसार ही निर्वाण है।